बालमन की आवाज़

For private circulation only

आभार

संपादकीय टीम के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि 'बाल मन की आवाज' पत्रिका अपने प्रथम संस्करण के रूप में सबके समक्ष प्रस्तुत है। 'ई- मैग्ज़ीन' की संपादकीय टीम उन सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने अपनी लेखन - सामग्री प्रकाशन के लिए भेजी। ओमान के सभी भारतीय विद्यालयों के बोर्ड आफ डाइरेक्टर के प्रति हम विशेष आभार व्यक्त करते हैं क योंकि उनके सुझाव, प्रेरणा व मार्गदर्शन के कारण ही यह सृजन का कार्य संभव हो सका। उन सभी भारतीय विद्यालयों के छात्र - छात्राओं, अध्यापक - अध्यापिकाओं और प्रधानाचार्यो के प्रति सस्नेह आभार, जिनके प्रयास से ही यह 'बाल मन की आवाज' रूपी बगिया पल्लवित और पुष्पित हो सकी। हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमारे सभी पाठक रचनाओं का आनंद लेंगे।

शुभ कामनाओं सहित

संपादकीय टीम

अनुक्रमणिका

01 चेरमेन का संदेश 4

02 एडुकेशन अड़वैसर का संदेश 5

03 संपादकीय टीम का संदेश 6

04 संपादकीय टीम 7

05 कविताएँ 8-36

06 लेख 37-51

Message from the Chairman

Dear All,

India is a land of diversity. Like our motherland, the Indian Schools in Oman too is a beautiful mixture of cultures, languages and ideas. As children grow, especially in cities with limited interpersonal interaction, they need outlets for mental stimulation and creativity to learn and develop critical skills such as social learning.

As the Board of Directors of Indian Schools in Oman, we strive to ensure that our children receive every opportunity possible to develop, enhance & showcase their skills. Our ultimate vision and aim, captured by Vision 2020, is to ensure that every child from our schools will undergo transformative learning and be equipped with the knowledge, skills and well-being to find their identity and purpose in life.

It is thus in this light that we are launching annual E-magazines in various languages like English, Hindi, Malayalam, French, Sanskrit and Arabic to promote a love for the written word among our children.

As social animals, communication is at the heart of human experience. While other animals too signal and convey messages in some form or the other, what differentiates the human species is our ability to respond rather than react to immediate stimuli. Our ability to think & express our abstract thoughts. Our creativity in continually improving our languages. For humans, language is a cultural phenomenon that is more than just innate biology.

We hope this e-magazine

- enlightens and educates
- inspires you to express your thoughts &
- sparks a love for the language

It is thus with great pleasure that we welcome you, dear reader to the first edition of the Indian School e-magazines - a collection of stories, poems & articles written by our children & curated and edited by our school resources.

Here's the first edition, dedicated to all the amazing people who have made this magazine a reality.

So, read on, ponder and participate.

With Love,

Dr. Baby Sam Saamuel
Chairman, Board of Directors

Educational Advisor's Message

The Language magazine is yet another new initiative of the Board of Directors of Indian Schools in Oman. This novel idea of having magazines in different languages aims to encourage creative writing among the student community in the language of their interest. Through creative writing children can express their innovative ideas, emotions, thoughts etc. It helps not only in enhancing their imaginations and writing skill but also provide a platform for expressing emotions, especially for those who are hesitant to do it otherwise.

On behalf of the Board of Directors, I would like to place on record our sincere thanks to all language teachers for their invaluable support in making this dream a reality.

Our appreciation to all the young writers, who have contributed their writings to this magazine and we wish them best to become well-known writers of tomorrow.

As it is said, every long journey begins with a single step; I hope this initiative will create a lot of creative writers in days to come.

M.P. Vinoba
Education Advisor

संपादकीय टीम की ओर से

ओमान के सभी भारतीय विद्यालयों की ओर से हिन्दी के ई-मैग़्ज़ीन के प्रथम संस्करण में आप सभी लोगों का हार्दिक स्वागत है। हम अपने छात्र – छात्राओं के अविस्मरणीय क्षणों और उपलब्धियों को आपके समक्ष प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक हैं। इस पत्रिका द्वारा हमारा यह प्रयास है कि हम अपने युवा पीढ़ी को सृजन की ओर अग्रसरित करें। उनमें रचनात्मकता और मौलिकता का विकास हो। हमारे मनीषियों ने भी कहा है कि यदि विद्यार्थी जीवन सरल और आचरण संस्कारी होने के साथ – साथ मन के भाव भी यदि कोमल हों तो यही है 'सोने पे सुहागा'। इस पत्रिका मे विद्यार्थियों के मन के कोमल भावों को ही उकेरने का एक छोटा सा प्रयास है।

कहा जाता है कि बीता हुआ समय वापस नहीं आता इसलिए हमारा यह भी प्रयास है कि अपने इन किशोरों के विद्यालयी जीवन के जीवंत क्षणों को समेटकर आपके सामने प्रस्तुत करें। आने वाले समय में दूसरे बच्चे भी साहित्य सृजन के लिए प्रेरित हों।

हमारे यही बच्चे कल के भविष्य हैं। इन्हीं के कंधों पर देश की आन – बान और शान है। आने वाले समय में अपने भारतीय तीज – त्योहार, हाट – बाट और खेत – खलिहानों को यही अपनी रचना के माध्यम से सिंचित करेंगे।

ओमान के सभी भारतीय विद्यालयों में छात्र – छात्राओं का योगदान सराहनीय है। ईमैग़्ज़ीन इन सभी विद्यालयों के प्रांगणों में हुए सृजनात्मक कार्य और मन के भावों व विचारों को आपके सम्मुख रखते हुए अत्यधिक प्रसन्न है।

शुभ कामनाओं सहित
संपादकीय टीम

ई-मैग़्ज़ीन टीम

श्रीमती ज्योति गणेशनाथ
मुख्य संपादक

श्री सुधाकर त्रिपाठी
प्रबंध संपादक

श्री मणिकंडन
कवर डिजाइन

संज्ञा भट्टाचार्य
9-B
चित्रकारी और कलाकृति

शंकर नारायणन कार्तिक
10-A
डिजाइनिंग टीम

पर्ल गोस्वामी
9-B
डिजाइनिंग टीम

मेरी प्यारी माँ

सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, माँ है मेरी,
उसके आँचल का छोर पकड़कर,
हुई मैं बड़ी सयानी।
मेरा वह नन्हा-सा बचपन,
बहुत ही प्यारा, बहुत ही न्यारा,
लोरी मुझे सुनाती थी, थपथपाकर मुझे सुलाती थी,
सूरज की पहली किरण के साथ, प्यार से मुझे जगाती थी ।
माँ के हर उपदेश को, कभी न भुला पायी मैं,
उसकी हर बात को, मन के भीतर उतार पायी मैं,
तब माँ ही सब थी, उसकी हर सीख थी,
लकीर पत्थर की ।
माँ शब्द से ही मन में भरता,
आनंद और उत्साह की उमंग,
हर सुख-दुख की साथी वह,
हर आशा की किरण भी वह।
मन में आस लगाए रहती हूँ मैं,
जन्म-जन्मांतर तक तेरे आँचल की छाव में रहूँ ,
तू ही है ममता की मूरत, तेरे बिना अधूरी हूँ मैं,
तेरा साथ कभी न छूटे, यही बस ईश्वर से माँगती हूँ मैं ।

तनु एन स्टीफन
नौवीं 'ब'

मेरी माँ

माँ ! जब तू सिर पर हाथ फेरे , मैं समझूँ अब हुआ सवेरा।
तेरी थपकी माँ बतलाए ,चल सोजा अब हुआ अँधेरा।
तेरे साथ जो दिन हो व्यतीत ,वह बन जाए खुशी का गीत ।
पर जिस दिन तू न दिखे , दुनिया सूनी लगे मुझे।
तेरी ऊँगली मेरी राहें , मेरा घर है तेरी बाहें ।
ओ माँ ,ओ माँ !

फ़ातिमा शम्स
पाँचवी
इंडियन स्कूल अल बुरेमी

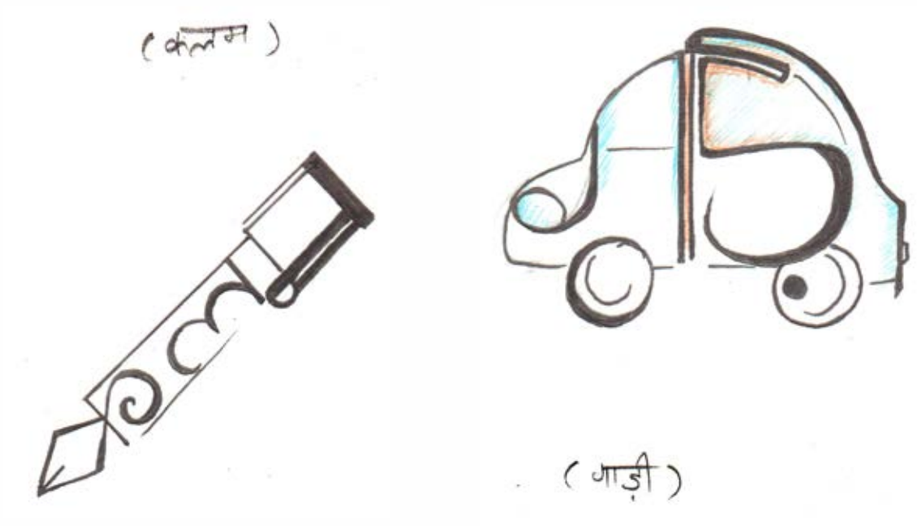

मिठाई और मेरे बहन - भाई

साथ ही रहा करते थे
साथ ही मज़ा करते थे
घर में मचाई थी हमने धूम
लेने न दिया माँ-बाप को सुकून
खेलना और लड़ना था हमारा काम ।
ऐसे ही हो जाती थी हर दिन की शाम
घर में हम दो भाई और दो बहन थे
कुल मिलाकर हम चार मस्ताने थे ।

एक दिन लाए हमारे अब्बा
एक सुंदर मिठाई का डब्बा
सब को चाहिए था अपना-अपना हिस्सा
बस फिर खत्म हो गया किस्सा ।
छीनना-झपटना शुरू हुआ
रोना-धोना शुरू हुआ
माँ ने सबको एक-एक लगाया
उसके साथ खूब सुनाया.
अंत में सबको मीठा मिल ही गया हम सबका मन खिल ही गया .

अब वह लम्हा कहाँ होता है
अब वह समय गुज़र गया है
किसी ने अपना काम चलाया
तो किसी ने अपना घर बसाया ।
कोई कॉलेज जा रहा है
तो कोई पढ़ाई कर रहा है
घर में मैं सबसे छोटी हूँ
और अब सबको याद करके रोती हूँ ।
कौन खाएगा मेरे हिस्से की मिठाई
बड़े हो गए मेरे बहन-भाई ।

रहमा मोहम्मद इकबाल
आठवीं
इंडियन स्कूल निज़वा

मोबाइल फोन

दुनिया में मोबाइल फोन ने,
तहलका है मचाया ।
छोटी-सी एक चीज़ ने
रिश्तों को है भुलाया ।

माता-पिता, बच्चों के हाथ
कैसा ? खिलौना है आया ।
बातें करने जिसने जैसे,
सबको है भुलाया ।

हँसी ठहाको से गूँजते
ड्राइंग रूम को ।
कम्बख्त इस फोन ने तो,
शमशान घाट है बनाया ।

दादी, नानी की जगह
सब घरों में गूगल बाबा है आया ।
इनकी कहानियों को ऑन लाइन
अब इसने ही दिखाया ।

गूगल बाबा ने ऐसा ,
असर है दिखाया ।
बच्चों ने तो जैसे,
नैतिक मूल्यों को ही भुलाया ।

सुंदर प्यारी आँखों पर,
चश्मों ने है अधिकार जमाया ।
चंद्र मुख पर जैसे,
ग्रहण ही लगाया ।

स्वादिष्ट पकवानों की थाली में,
सिर्फ ब्रेड ही आया ।
मोबाइल के कारण ही,
डाक्टरों ने, अच्छा धन है कमाया ।

झूठ-भ्रष्टाचार की जड़ को,
हमने घर पर ही उगाया ।
क्यों नहीं हमने
इस राक्षस को दफनाया ।

हरमनजीत सिंह हरा
नौवीं 'ब'

बस एक बार

एक बार समुंदर की लहरों से टकराकर तो देखो
विषम परिस्थितियों में धैर्य का दामन थामकर तो देखो
आँधियाँ भी अपना रुख मोड़ लेंगी
एक बार हिम्मत का दीया जलाकर तो देखो ।

छल ,कपट ,अभिमान का सर झुका कर तो देखो
अपने अंदर के सोए बच्चे को सहलाकर तो देखो
बुराई पर अच्छाई की जीत सुनिश्चित होगी
बस एक बार अपने अंदर इंसानियत जगा कर तो देखो ।

भड़की हुई चिंगारियाँ बुझा कर तो देखो
अपनों के लिए खुद को हार कर तो देखो
जो दूसरों के दिलों को जीत ले
ऐसी शीतल जल की फुहार बनकर तो देखो ।

असफलता भी घुटने टेक देगी
एक बार परिश्रम का पेड़ लगा कर तो देखो
हलकी-फुलकी ज़िन्दगी नज़र आएगी
बस एक बार ख्वाहिशों का बोझ उतार कर तो देखो ।

ज़ोहा अनवर
नौवीं
इंडियन स्कूल निज़वा

हम एक हैं

मैं पंजाबी तू बंगाली , ये हैं राजस्थान के।
ऐसी बातें कभी न सोचो , हम सब हिंदुस्तान के।
जी हाँ हम पाँच उँगलियाँ नहीं ,एक मुट्ठी हैं।
हम बिखरे मोती नहीं, एक माला हैं।
हम बूँदें नहीं , एक सागर हैं।
हम सब भारतवासी एक हैं।

मोहम्मद सिनान
छठी
इंडियन स्कूल अल वुरेमी

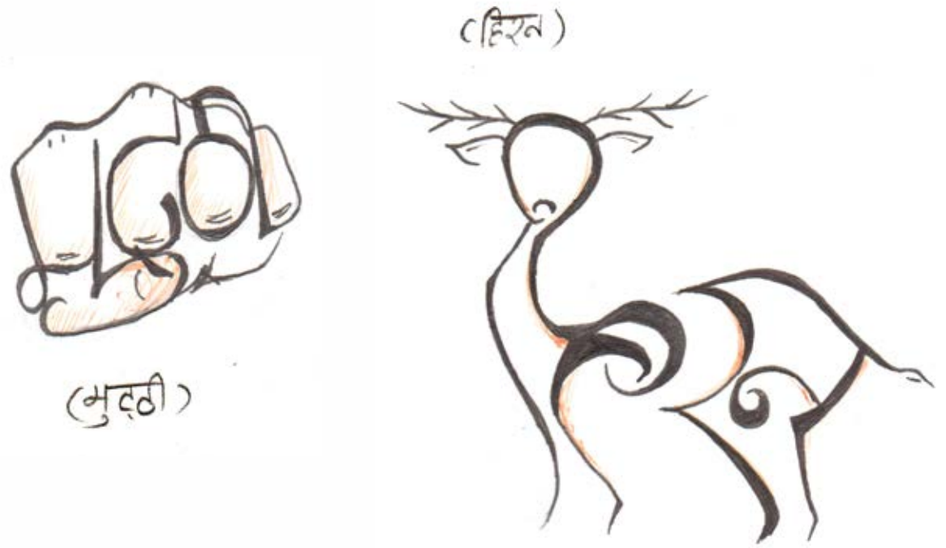

प्रकृति

कितना सुंदर भाग्य हमारा ,
हम रहते हैं धरती पर।
कितने सुंदर तरुअर, सरोवर ,
कितने सुंदर उपवन हैं यह।
ऊँचे – ऊँचे पर्वत – शिखर ,
बहते झरने झर – झर, झर – झर।
नदियाँ बहतीं कल – कल, कल – कल ,
पशु – पक्षी , फल – फूल रतन।
सूरज, चंदा, तारे, गगन,
हम रहते हैं मगन – मगन।
कितना सुंदर भाग्य हमारा,
हम रहते हैं धरती पर।

नव्या श्रीवास्तव
दसवीं 'ब'
भारतीय विद्यालय दारसेत

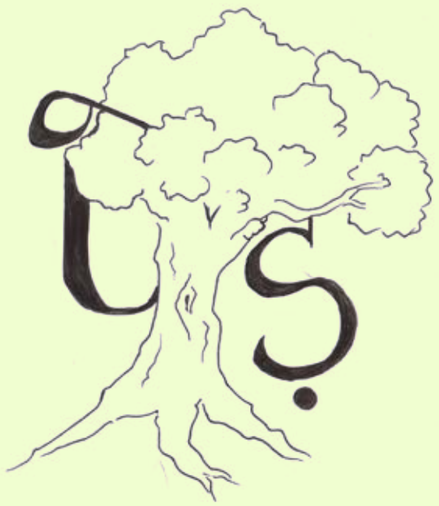

आओ दोस्तो ! पानी बचाएँ ..

पानी होता सबसे पावन
इस पर निर्भर सबका जीवन
पानी का होता बहुत उपयोग,
इसलिए करना है हमें इसका सदुपयोग।

ज़ोर से लगी हो जब प्यास,
पानी न हो कहीं आस-पास,
कैसी होती है व्याकुलता,
कैसा होता कठिन अहसास।
पानी में होती है बहुत खूबी,
इसलिए करो पानी की बचत अभी।

पानी होता बहुत मूल्यवान,
देता सबको जीवन दान।
पेड़-पौधों को पानी दे,
धरती पर हरियाली दे।
पानी बहुमूल्य है, न हो इसका नुकसान,
इसको दूषित करके स्वस्थ न रह पाता इंसान।
आओ दोस्तों कसम खाएँ,
मिलजुलकर हम पानी बचाएँ।

तेज .पी. निल्कुंद
दसवीं
भा. वि. अल वादी अल कबीर

माँ का ईश्वरत्व

सूरज-सी उसकी हँसी थी,
चाँद- सा बेटा था उसका,
“मेरा बेटा, मेरी ढाल बनेगा”
सदैव मन कहता उसका ।

पाला-पोसा ,पढ़ाया-लिखाया,
हर बात मानी थी उसकी,
अपने सपने छोड़-छाड़कर
परवरिश माँ ने की उसकी।

पिता की हर डाँट -मार से ,
बचाती रहती वह उसको,
पिता कहता, बड़ा होकर तेरा बेटा,
कहीं छोड़ न जाए तुझको।”

अपने बेटे पर मुझे है विश्वास,
ध्यान रखेगा मेरा वह-
आँखें उसकी भर आती,
जब-जब यह कहती वह ।

पुत्र बड़ा हुआ उसका
घर में दुल्हन लाया वह,
माता -पिता की इच्छा पूरी हुई
हज़ारों खुशियाँ घर आईं ।

बीत गए कई साल,
पिता का अंतिम समय आया,
अब तो सब कुछ मेरे नाम हो जाएगा,
यह विचार उसके मन में आया।

बूढ़ी माँ ने रोते हुए, कहा -
बेटा तू ही है मेरा सहारा
बेटे ने जायदाद माँगी ,
और पलट दी माँ की काया ।

निकाल दिया माँ को उसने घर से,
पैसे ने नाता तोड़ दिया,
नहीं पता था पुत्र को कि ,
उसने ईश्वर का हाथ छोड़ दिया।

पड़ी रही माँ प्लाट्फोर्म पर ,
फ़िर भी पुत्र को सिर्फ आशीर्वाद दिया,
आँसू न रुकते थे उसके,
बेटे ने क्या पुरस्कार दिया।

जिस पुत्र को छत दी उसने,
उसी ने छत का साया छीन लिया ।
मगर क्या कर सकती थी माँ,
सच को उसने स्वीकार किया।

रातें लंबी लगने लगी ,
ठंड-भूख से बुरा हाल हुआ ,
दुख का बोझा ढोते-ढोते,
जीवन जैसे भार हुआ।

साँसे अब उसकी फूलने लगी,
दिल का धड़कना बंद हुआ,
अब भी चेहरा पुत्र का देखना चाहा,
पर नेत्र हमेशा के लिए बंद हुआ

पुत्र के पाप का घड़ा,
अब गिरकर टूटा,
माँ का हाथ हमेशा-हमेशा के लिए,
उसके हाथ से छूटा ।

उड़ते- उड़ते खबर मिली,
हुआ नहीं उसको यकीन,
स्टेशन पहुँचा तो टूटा उसका भ्रम,
रोने लगा पटक - पटकर अपना सिर।

“माफ करदे मुझे माँ ,
गलती हुई मुझसे बड़ी,
काश जिंदगी के आखिरी दिन ,
मैं तेरे साथ बिता पाता।

स्वर्ग से देखी माँ ने,
अपने पुत्र की दशा ,
कहा ,“मत रो बेटे,
खुश रहो तुम हमेशा।

सय्येदा इंशा फ़ातिमा ज़यदी
नौवीं D
इंडियन स्कूल मस्कत

दीवार पर

दीवार पर
रात में आती हैं,
छिपकलियाँ दीवार पर,
चित्र हैं टँगे, परिवार के सभी लोगों के,
दीवार पर।
छोटे बच्चे करते हैं, प्रदर्शन अपनी कला का,
दीवार पर।

जब रात में सब सो जाते हैं,
रात भर जागकर ,घर को सुरक्षित तज्ञजप् है, दीवार।
चोर अंदर न आने पाएँ, इसके लिए है, दीवार।

जब अकेले रहते हैं हम, तो बातें करती हैं, दीवार।
दीवार ! दीवार ! दीवार !
हमें सुरक्षित रखने के लिए
हमेशा तैयार रहती हैं दीवार।।

नर्मदा हरिकृष्णन
आठवीं
भारतीय विद्यालय इबरा

किताबें किताबें!!!

हम क्या करते हैं उनसे ?
पढ़ते हैं या पढ़ाते हैं।
किताबें पढ़कर बढ़ता है ज्ञान,
हम पढ़कर रचते हैं किताब।

नहीं पढ़ते हैं जो किताब,
नहीं बढ़ता है उनका ज्ञान।
किताबें पढ़कर विज्ञान सीखते,
विज्ञान पढ़कर वैज्ञानिक बनते।

पढ़ना जिससे होता शुरू,
वही किताब कहलाता हंनर्णि
करते जो किताबों का मान,
वही पाते हैं जीवन में सम्मान।

शाकेब इस्लाम
सातवीं –अ
भारतीय विद्यालय इबरा

पार्क में

मुन्ना आता है,
झूले पर खेलने पार्क में।

मम्मी आती हैं,
बात करने पार्क में।

पापा आते हैं,
टहलने पार्क में।

दादा-दादी आते हैं,
मुन्ना की देख-भाल करने।

दोस्त आते हैं,
हमें बहुत खुशी होती है।

इस तरह दिखता है,
रौनक से भरा हर रोज़ पार्क।

ऐश्वर्या
आठवीं
भारतीय विद्यालय इबरा

रुकना क्यों?

हर किसी का है स्वत्व ,
मुमकिन इस दुनिया में ,
तो क्यों रुकते हो तुम विघ्नों से।
हर चीज़ का है एक उपाय ।
माना हर कोई पारखी नहीं हो सकता ,
पर मेधावी तो बन सकता है ।
कुछ तो जब से इस दुनिया में आए तब से मेधावी हैं ,
पर कुछ अपने हुनर को पहचानकर मेधावी बन सकते हैं ।

रयान फारुक
सातवीं
भारतीय विद्यालय अलसीब

सुंदर धरती !

धरती , धरती , धरती
कितनी सुंदर है यह धरती,
सभी देश भी सुंदर हैं ।
फल - फूल भी कितने सुंदर,
प्रकृति का हर कण सुंदर ,
इतनी सुंदर जगह भगवान ने एक
तोहफा जैसे दिया है यह धरती ।
कितनी सुंदर इतनी सुंदर धरती, मत
खोओ इस धरती को ।
मत भूलो भगवान को,
भूलोगे तो इतना सुंदर देश नही मिलेगा ।
इसलिए प्रार्थना करो तब मिलेगी खुशी इस धरती पर।

अलेक्स जार्ज
3 'एफ'
भारतीय विद्यालय सीव

मेरा भारत देश

बारी-बारी ऋतुएँ आतीं,
अपनी छटा यहाँ दिखलातीं,
फल-फूलों से भरे बगीचे।
चिड़ियाँ मीठे गीत सुनाती,
देश मेरा यह सबसे न्यारा,
कितना सुंदर, कितना प्यारा ।

मोनिश. सी,
IV-D
इंडियन स्कूल सलालाह

गर्मी का है मौसम आया

तपता अंबर, तपती धरती
सूरज ने कहर है ढाया।
गर्मी का है मौसम आया,
गर्मी का है मौसम आया।

पेड़ पत्तियाँ हैं सब प्यासे
कुएँ नदी तालाब भी प्यासे
धूल भरी आँधियों में
लोगों का जी घबराता है।

गर्मी का है मौसम आया,
गर्मी का है मौसम आया।
सूखे हैं तालाब हमारे
व्याकुल पशु-पक्षी बेचारे

अंगार बरसती लू में
हम सब को तड़पाता है।
गर्मी का है मौसम आया,
गर्मी का है मौसम आया।

स्वप्निल अवस्थी
आठ (अ)
भारतीय विद्यालय माबेला

आओ मिलकर भारत को स्वच्छ बनाएँ

आओ मिलकर भारत माता को बचाएँ
अपनी धरती को हरा-भरा बनाएँ।
देश को स्वच्छ बनाकर
इस जीवन को स्वस्थ बनाएँ।।

आओ हम सब कसम यह खाएँ
कि स्वच्छ भारत अभियान बढ़ाएँ।
प्रधान मंत्री मोदी जी का है यह सपना
वातावरण को स्वच्छ, स्वस्थ और सुंदर रखना।

उन्नति तभी करेगा भारत
जब स्वस्थ होगा इसका हर एक नागरिक।
आओ मिलकर भारत को स्वच्छ देश बनाएँ
स्वच्छ बनाकर इस जीवन को खुशहाल बनाएँ ।

आओ मिलकर कसम यह खाएँ
पीपल ,नीम ,गूलर और आम आदि पेड़ लगाएँ।
अपने देश को स्वच्छ बनाकर
इस जीवन को स्वस्थ बनाएँ।।

हर एक का है फर्ज़ यह बनता
कचरे को सीमित है करना।
पल-पल बढ़ते प्रदूषण की लगाम कसना।
वातावरण को स्वच्छ रखना।

अकीदत खानम
पाँचवी
आई. एस. जी-आई

बारिश आई

बारिश आई ,बारिश आई
सबके घर में खुशहाली छाई।
मुन्नू ने बैठकर नाव बनाए
पापा जाकर कचौरी लाए।
चुन्नू मज़े से बारिश में नहाया
मम्मी ने रसोई में खाना पकाया।
दादी ने मुझे कहानी सुनाई
दादा ने मुझसे यह कविता लिखवाई।
सबके घर में खुशी लाने वाला
वर्षा का मौसम हर साल आए।

नधि रोशन
पाँचवी
आई . एस . जी -आई

मिलकर पेड़ लगाएँ

हरा- भरा जीवन बनाओ।
सब मिलकर पेड़ लगाओ।
छाया ये हमको देते हैं,
फल ये हमको देते हैं,
बाढ़ से हमको बचाते हैं,
प्रदूषण दूर भगाते हैं,
हम भी पेड़ लगाएँगे
हरा- भरा जग बनाएँगे।

स्वित्रा धृति
चौथी
आई . एस . जी -आई

गरीबों का दुख

क्यों पूछा नकली अमीरों से,
जो गरीब हैं अपने मन से।
कोई गरीब बना विन पढ़ाई के,
तो कोई गरीब बना विन मेहनत के,
यही है गरीबों का दुख।

बिना माँ और पिता के कुछ बच्चे,
जिन्हें प्यार नहीं मिलता है।
ईश्वर से पूछते हैं,
अरे! क्या हम नहीं हैं तेरे बच्चे?
हाय! यही है गरीबों का दुख।

दुखों से भरा हुआ गरीब,
चल रहा हूँ उस रास्ते पर,
चलता रहूँगा हमेशा,
चाहे भूख से मर जाऊँ या
अमीरों की नफ़रत से,
पर अपना ईमान न बेचूँगा।
यही है गरीबों का दुख।

सामिया अज़मिन
नौवीं सी
भारतीय विद्यालय मुलदधा

मुझे भी अधिकार है

इस संसार में आने का मुझे भी अधिकार है,
इस अनमोल जिंदगी से मुझे भी प्यार है।
क्यों छीन ली जाती हैं साँसें मेरी,जन्म लेने से पहले?
क्यों नहीं साँसों पर मेरा अधिकार है?

मानव ! बहुत शिद्दत से जान लेता है तू मेरी।
तू इस जग में बहुत बड़ा कलाकार है।
तेरे इस कर्म पर मुझे धिक्कार है,
इस सोच में छिपा,सिर्फ तेरा अहंकार है।

मैंने एक ओर देश की कमान थामी है,
दूसरी ओर मैंने अपनी बलि भी दी है।
अगर तूने हाथ में कटार थामी है,
तो मैंने भी हाथ में तलवार लहराई है।

वहू की अपेक्षा है तुझे, पर मेरा तू करता वहिष्कार है।
ज्ञानदीपक जलाकर, मिटाना तुझे अंधकार है।
रोक दे तू अव इस अपराध को, यह तो अत्याचार है।
इसमें तेरी जीत नहीं, निश्चित ही हार है।

मुझे भी जीने का अधिकार है।
हाँ, मुझे भी जीने का अधिकार है।

नाम प्रियंका यादव
दसवीं
विद्यालय इंडियन स्कूल, सोहार

अंग्रेज़ी का भूत

सबके ऊपर अंग्रेज़ी का भूत चढ़ा है,
घर-घर उसका राज्य बढ़ा है,
हैलो-हाय का प्रचार बढ़ा है,
नमस्कार उदास खड़ा है।

कभी कृष्ण, कभी राम हुए,
अब तो डिस्को भगवान हुए,
अँधेरे में खो गया धोती कुर्ता,
साथ में बना संस्कृत का भूर्ता,

सब दाल-भात से बचकर,
केक, पेस्टी खाते हैं।
गीत - भजन समझ नहीं आते,
माइकल जैक्सन भाते हैं।

दूध-दही से टूटा नाता,
कॉफी से दिल लगता है।
छाँछ बिल्कुल अच्छी नहीं लगती,
कोको कोला भाती है।

अंग्रेज़ी की आई बहार
संस्कृत पर हुआ अत्याचार
तहस-नहस इसने किया
भारत का मज़बूत आधार

अब्दुल वहाब खान
चौथी
भारतीय विद्यालय मावेला

संघर्ष नहीं बचपना है तुम्हारा.....

'संघर्ष क्या है, तुम जानते हो!
हर छोटी बात पर दुआ माँगते हो।
सुनते हम नादान ऐसी बातें चार,
कभी हफ्ते में बारबार। '

मुश्किलें देख दिल जाता है सहम,
घबरा जाता तुम्हारा मन।
क्या कभी नज़रें घुमाई तुमने
सड़क के उस पार ?
तुम्हारी उम्र का लड़का
जो बस्तियों में करता कारोबार।
कभी कूड़े के खज़ाने में,
कभी गलियों के नज़राने में,
कभी मिश्रा जी के घराने में,
कभी मेलों के किनारों में,
तुम देखते हो उसे हँसते हुए,
दिन भर परिश्रम करते हुए।
उसके मासूम चेहरे पर
न दिखता है गुस्सा, न दर्द,
बचपन उसका छिन गया,
बाल्यकाल में बना वह मर्द।
तुम हो सकते थे उसकी जगह,
हालात भी हो सकते थे उसकी तरह।

पर तुम्हारा जीवन है खुशियों से भरा,
फूल ही मिले काँटों की जगह।
क्यों पुस्तकें लगती हैं तुम्हें सज़ा,
क्या ईश्वर की यह देन है तुम्हारी बला?
यह संघर्ष नहीं बचपना है तुम्हारा,
संघर्ष नहीं बचपना है तुम्हारा....

नाम सौम्या तिवारी
दसवीं
विद्यालय इंडियन स्कूल, सोहार

कौन-सा देश तुम्हारा

मैंने पूछा माँ से,
कौन-सा देश है मेरा ?
माँ ने बोला मुझसे,
यही देश है हमारा।
मैंने पूछा माँ से,
फिर क्यों लोग पूछे मुझसे,
कौन-सा देश है तुम्हारा ?

माँ ने बोला मुझसे,
जैसे कृष्ण की माँएँ हैं दो,
वैसे हमारे देश हैं दो।
भारत देश है देवकी मैया।
ओमान देश है, यशोदा मैया।
वहाँ की धरती में हरियाली,
यहाँ की धरती है सुनहरी।

भारत देश है जन्मदाता।
ओमान देश है अन्नदाता।

आयुषी मयुर डी
तीन सौ
भारतीय विद्यालय मावेला

सर्दियाँ और गर्मियाँ

आई आई सर्दी आई,
ठंडी -ठंडी बरफ लाई।
मिलकर बाहर खेलने जाएँ,
बड़े-बड़े स्नोमैन बनाएँ ।

आया -आया अप्रैल आया,
गरमी लेकर सूरज आया।
बाहर खेलना कठिन हो गया,
तो हमने जमकर बरफ़ खाया।

जोयंतिका मलिक
कक्षा :V
इंडियन स्कूल जलान

परीक्षा के दिन

बिना तनाव के , बिना चिंता के
बिना डरे, बिना रुके
चाहे कोई कुछ भी कहे
मैं तो अपनी राह चलती।
तारे जैसे मुश्किलें अनगिनत
इन सबसे बिना डरे -
आगे बढ़ती रहती हूँ।
है पता कि परीक्षा,
ज़रूरी मेरे जीवन में ,
फिर भी मैं मस्त मौला।
परीक्षा आएगी फिर जाएगी।
जो भी पढ़ा उतार दी कागज़ पर
नहीं यह जीवन की परीक्षा
ज्ञान , मात्र पुस्तक का नहीं,
देखो दुनिया को भी , समझो उसे भी
न भाता बंद कमरे की पढ़ाई
न भाता माँ के ताने
रहो खुली हवा में , रखो मन को खुश ।
थोड़ी हँसी , थोड़ी खुशी ,
थोड़ा गम , थोड़ा गुस्सा ,
नियति यही मेरी।
जितना सोचा उतना मिला ,
अंक मुझे और खुश हुई।
हाय ये परीक्षा सिर खाए
हाय ये परीक्षा कहाँ से आए?

मेघा .वि .कुमार
कक्षा :X
इंडियन स्कूल जलान

"जब हम अपना जीवन जननी हिंदी, मातृभाषा हिंदी के लिये समर्पण कर दें तब हम हिंदी के प्रेमी कहे जा सकते हैं।"
- गोविन्ददास।

"हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।"
- मौलाना हसरत मोहानी।

सरदी के दिन

खडी थी बाहर,
ठंडी हवा बही
लगा कि बारिश होगी ,
पर नहीं हुई
खेलने गई ऊपर छत पर ,
देखा उड़ते पक्षी को ,
मन को भाया वह,

कई रूप लिए बादल,
खुश किया मुझे
सरदी हुई, ज़ुकाम हुआ ,
माँ ने कहा “मत जा बाहर” ,
सरदी, जुकाम बढ़ जाएगा
फिर बस देखी टी.वी,
यूँ गया दिन मेरा ।

स्नेहा अजिकुमार
कक्षा :V
इंडियन स्कूल जलान

मेरे अधूरे अरमान

हो गई जीवन जैसे अँधेरी रात,
जो रह गई ख्वाहिश अधूरी सी,
ठहरी थी जो मुस्कान झिलमिलाती हुई,
न जाने कहाँ खो गई ?

तारे हैं जैसे अनगिनत,
पाने की चाहत है अटूट,
पर समय जो बीत गया,
अब क्या वापस आएगा।

अरमान तो बड़े थे,
पर सीमाएँ थी अनिगिनत,
कलंक सा रह गया दिल में,
न मिट सकता मिटाने से

खून खौल उठता है,
सोचती हूँ जब क्यों न खींची
ये हिम्मत की लकीर,
थम सा गया है ये जीवन,
ऐसा लगता है दफ़न हो गया,
अपने ख्वाबों की तस्वीर।

जोहाना अरुण अरक्कल
कक्षा :VIII
इंडियन स्कूल जलान

कल किसने देखा है?

जीवन में दीया तो सबने देखा है,
पर उजाला तो सिर्फ़ नसीब वालों ने देखा है।
जिंदगी के दुख तो सबने महसूस किए हैं,
पर सुख सिर्फ़ नसीब वालों ने देखा है।
फ़सल तो किसान उगाता है,
पर खाना कितनों को नसीब होता है।
वर्षा तो सबने देखी है,
पर जल कितनों को मिलता है।
इसलिए हमारे पास जो है उसमें खुश रहें,
क्योंकि कल किसने देखा है

फातिमा ठक्कर,
X-A
इंडियन स्कूल सलालाह

ऐसा क्यों होता है?

ज़िंदगी में हर इनसान नाम कमाना चाहता है और नाम कमाने के चक्कर में हम इतने आगे चले जाते हैं कि हम अपनी ज़िंदगी की दो सबसे खूबसूरत नियामतों को भूल जाते हैं। ये दो खूबसूरत नियामतें हैं हमारे माता पिता। आखिर ऐसा क्यों होता है कि हमारे माता पिता अपनी पूरी ज़िंदगी हमें बड़ा करने में , हमें पालने में लगा देते हैं। दूसरी ओर हम हैं कि जब उन्हें हमारी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है उस समय उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं। ऐसा क्यों होता है कि जो माँ बिना शिकायत किए घर का सारा काम करती है , उसी माँ के घर में रहने से हमें आपत्ति होने लगती है। ऐसा क्यों होता है कि जिस पिता ने हमारी सभी ज़रूरतें पूरी की उसी पिता की एक भी ज़रूरत हमसे पूरी नहीं होती। ऐसा क्यों होता है कि माता पिता, चार बच्चों को संभाल लेते हैं और चार चार बच्चे अपने माता पिता को संभाल नहीं पाते। इसका जवाब मेरे पास नहीं हैं और शायद न कभी भविष्य में मिल पाएगा।

रवनीत कौर
दसवीं
इंडियन स्कूल अल बुरेमी

अपनी सहायता स्वयं करो

एक समय की बात है। किसी नगर में डेविड नाम का एक लड़का रहता था। वह बड़ा दयालु और परिश्रमी लड़का था और सदा दूसरों की सहायता करता था। उसे जब भी अपने पापा से जेब खर्च मिलता उससे वह गरीब बच्चों के लिए खानेपीने की चीज़ें खरीदता। कभी कभी उसके पास पैसे कम पड़ जाते। एक दिन उ सके दिमाग में विचार आया कि क्यों न मैं अपने मित्रों के साथ मिलकर बेकरी का सामान बनाकर बेचूँ। सामान बेचकर जो पैसे मिलेंगे उससे गरीब बच्चों के लिए कुछ और भी सामान खरीदा जा सकता है। उसने अपना यह विचार अपने दो मित्रों को बताया। उसके मित्रों को डेविड का यह सुझाव अच्छा लगा। सबने मिलकर कुछ बनाने की सोची। नीना ने कपकेक बनाए , जॉन ने कुकीज़ बनाई और डेविड ने सैंडविच बनाए। अगले दिन सब मित्र एक बगीचे में गए और एक पेड़ के नीचे अपना सामान लेकर बैठ गए। उस दिन उनका एक भी सामान न बिका। दूसरे दिन भी उ नके पास कोई नहीं आया। डेविड के मित्र उदास हो गए। उन्होंने डेविड से कहा , "हमारा कुछ भी बिकने वाला नहीं है। हम बेकार में यहाँ बैठकर अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। चलो चलते हैं।" लेकिन डेविड नहीं माना। उसने कहा , "मैं अभी और इंतज़ार करूँगा। " उसके मित्र उसे छोड़कर चले गए। डेविड वहीं बैठा रहा और इंतज़ार करता रहा। बहुत इंतज़ार करने के बाद एक बूढ़ी औरत आई और उसने डेविड से सारा सामान खरीद लिया। डेविड बहुत खुश हुआ। उसे यह बात अच्छी तरह समझ में आ गई कि हमेशा अपने पर भरोसा रखना चाहिए। सब्र का फल सदा मीठा होता है।

अज़रा मोहम्मद नदीम
छठी
इंडियन स्कूल अल बुरेमी

स्त्री

दिन की रोशनी ख्वाबों को बनाने में गुज़र गई
रात की नींद बच्चों को सुलाने में निकल गई
जिस घर में मेरी जगह कोई स्थाई नहीं
सारी उमर उस घर को सँवारने में फिसल गई ॥
ज़िन्दगी के हर पहलू को अपनी वफ़ा से निभाकर बड़ी हुई है ।

हमारे समाज में एक आम स्त्री उसके जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम भूमिका निभाती है । वह पूरी ज़िन्दगी बेटी, बहन, पत्नी, बहू, माँ, सास जैसे रिश्तों को ईमानदारी से निभाती है । इन सभी रिश्तों को निभाने के बाद वह पूरी शक्ति और साहस से नौकरी करती है ताकि अपने परिवार का भविष्य उज्जवल बना सके । लेकिन समाज में आज भी स्त्री की योग्यता को पुरुष से कम देखा जाता है । हर स्त्री का काम करने का तरीका, सोचने का तरीका, व्यवहार का तरीका पुरुषों से अलग है । भारत जैसे देश में आम महिलाओं के लिए समाज में एक लक्ष्मण रेखा बना दी गई है जिसे लांघना उनके लिए नामुमकिन है । कई सालों के बाद भी इस रीति में कोई बदलाव नहीं आया है । इस इक्कीसवीं सदी की भी बात की जाए तो आज भी महिलाओं को वे अधिकार नहीं मिले हैं जिनकी वे हकदार हैं । आज भी उनसे दुर व्यवहार किया जाता है ,उन्हें बहुत ही निम्न स्तर की जगह दी जाती है । कई बार उन पर अत्याचार किया जाता है । सामाजिक जागरुकता फैलाने के बाद भी महिलाओं को परेशान किया जाता है । उन्हें मानसिक पीड़ा सहनी पड़ती है । उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है । कहने को तो कई बार कहा जाता है कि लड़का-लड़की एक समान पर सच तो यह है कि आज भी उनको पुरुषों के बराबर का दर्जा नहीं मिलता है । पर अब नारी बदल रही है । उसका एक नया रूप समाज में निखर कर आ रहा है । इसका कारण है कि कई महान हस्तियाँ जैसे नीरजा भानट ,सरला ठकराल ,सावित्री बाई फुले ,मदर टेरेसा आदि से वे प्रेरित हुई हैं । ऐसे अनेक लाखों करोड़ों सितारों ने भारत को एक नए मकाम पर पहुँचाया है । पर आज भी उन करोड़ो सितारों में कई सारे सितारे गुमनाम रहे हैं । ऐसी और भी कई हस्तियाँ हैं जिनके महत्वपूर्ण योगदान से आज भी भारतवासी अंजान है । उन लोगों के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए और इस उम्मीद के साथ कि महिलाओं को आने वाले वर्षों में वह स्थान मिले जिसके लिए उन्हें आगे कभी भी अपना हक़ न माँगना पड़े । उन्हें सम्मान के साथ वह स्थान मिले तथा आनेवाली पीढ़ियों को संघर्ष न करना पड़े । उन्हें हर वह अधिकार मिले जिनके लिए आज तक वे लड़ती आई हैं । अपने समाज और देश के लिए गर्व का कारण बने । वे अपनी खुद की पहचान बनाए और खूब प्रगति करें ।

असमी सायेद
नौवीं -बी
इंडियन स्कूल निज़वा

काम की बातें

जैसे सितारे चमकने से पहले जलते हैं , वैसे ही एक इनसान जीवन में सफलता पाने से पहले असफल होता ही है।
समय कभी भी बदल सकता है , इसलिए हमें बुरे वक्त में बुरा काम कभी नहीं करना चाहिए।
हमें मन लगाकर पढ़ना चाहिए। अमीर बनने का नहीं सोचना चाहिए क्योंकि लोग हमसे पैसे तो छीन सकते हैं लेकिन हमसे हमारी विद्या नहीं छीन सकते।

लक्ष्मी वाला
छठी
इंडियन स्कूल अल बुरेमी

"आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी न होनी चाहिए।" - महावीर प्रसाद द्विवेदी।

कर भला तो हो भला

एक शहर में एक बच्चा सड़क के किनारे भीख माँग रहा था। एक दिन एक बूढ़ी औरत ने उस बालक को देखा। वह उसके पास आकर बोली ," बेटा ! तुम कपड़ों से , अपने हाव भाव से भिखारी नहीं लगते। ऐसी क्या बात है कि तुम भीख माँगने पर मजबूर हो गए हो? " बालक ने उस औरत से कहा, " दादीमाँ ! मेरा नाम रोहित है। मेरी माँ बीमार है और अस्पताल में है। मेरे पास उसके इलाज के लिए पैसे नही हैं। " रोहित की बात सुनकर वह बूढ़ी औरत बोली , "बेटा ! मेरे पास भी तुम्हें देने के लिए पैसे नहीं हैं। लेकिन तुम्हें एक बात बताती हूँ। तुम दूसरों का भला करो , भगवान तुम्हारा भला अवश्य करेंगे। " यह कहकर वह बुढ़िया वहाँ से चली गई । लेकिन उसकी बात रोहित के दिल को छू गई। रोहित अपनी माँ को देखने अस्पताल जा रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी बहुत देर से सड़क पार करना चाहता था लेकिन डर रहा था। रोहित ने बूढ़े आदमी से कहा , " बाबा ! क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ ? " बाबा ने रोहित को सड़क पार करवाने के लिए कहा। रोहित ने उसका हाथ पकड़कर उसे सड़क पार करवा दी। उस बूढ़े ने रोहित से कहा , " बेटा ! तुम बहुत अच्छे हो। मेरी एक दुकान है। मुझे दुकान के लिए एक भले लड़के की ज़रूरत है। क्या तुम मेरे पास नौकरी करोगे? "रोहित उस बूढ़े की दुकान पर नौकरी करने के लिए मान गया। अब वह अपने मन में सोचने लगा कि अब उसकी माँ का इलाज हो पाएगा। यह बात उसकी समझ में आ गई कि कर भला तो हो भला।

सुनहरी दासारी
पाँचवी
इंडियन स्कूल अल बुरेमी

याद रखने योग्य बातें

बर्फ और तूफान फूलों को तवाह कर सकते हैं
लेकिन बीज नहीं मार सकते - खलील जिब्रान

टूट जाओ परन्तु अन्याय के आगे झुको नहीं - सुभाष चंद्र बोस

केवल वही जीवित है जिसके गुण जीवित हैं - चाणक्य

संक्षेप ही प्रतिभा का परिचय है - शेक्सपियर

जो प्रयत्न करते हैं उनसे भूल भी होती है - गेरे

किसी भी बात को करने से पहले कहो मत - महात्मा गांधी

आज तक कोई आदमी नकल करके महान नहीं हुआ - जॉमरतान्सन

डरपोक जीवन में कई बार मरता है, वीर केवल एक बार मरता है- शेक्सपियर

ज्ञान की गहराई अथाह है - अज्ञात

वक्त किसी को माफ नहीं करता - सत्यकथन

सब बुराइयों की जड़ समाज है - रूसो

सबसे बड़ा न्यायकारी सर्वशक्तिमान ईश्वर है - अज्ञात

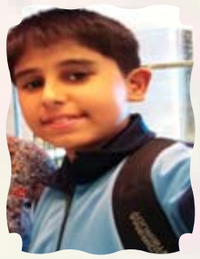

संकलन - अध्यात्म शर्मा
आठवीं
भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर

साल - 2050

मैं और कुछ वैज्ञानिक अभी उड़न तस्तरी में बैठे हैं । हम एक नए ग्रह की खोज कर रहे हैं।एक ऐसा ग्रह जहाँ पर ऑक्सीजऩ पानी आदि उपलब्ध हो क्योंकि पृथ्वी पर अब कुछ नहीं बचा है ।मानव जाति ने सब कुछ तबाह कर दिया है।तभी एकाएक मेरी सहायक आई और चाय पीने के लिए दी ।उसने मुझे थोड़ा आराम करने के लिए भी कहा।मैंने चाय का प्याला लिया और पास रखी कुर्सी पर जाकर बैठ गई ।जैसे ही मैंने चाय का पहला घूँट पिया वैसे है मेरी आँखों के सामने हरियाली और उद्यान में खेलते हुए बच्चे नज़र आए ।हाँ ये वह समय था जब लोगों को ऑक्सीजन के लिए तरसना नहीं पड़ता था।हर जगह पेड़ ही पेड़ थे ।सब कुछ अच्छा था।फिर मैंने चाय का एक घूँट और लिया तभी आज की दुनिया नज़र आई।**2050** की यह दुनिया जहाँ इंसान को ऑक्सीजन भी खरीदना पड़ता है ।पेड़ों की जगह अब सीमेंट की इमारतों ने ले ली है।आज कल लोग नकली पेड़ लगाकर खुश होते हैं ।फिर मुझे अपना बचपन याद आया ।सुबह उठकर यह नहीं सोचना पड़ता था कि आज कितना पानी इस्तेमाल करना पड़ेगा।उस समय कई संस्थान थे जो लोगों को प्रकृति के महत्त्व के बारे में बताते थे। प्रकृति के संसाधनों का दुरुपयोग न करने की सलाह देते थे।लेकिन लोग उनकी बातों का मज़ाक उड़ाते रहे और विकास के नाम पर प्रकृति का विनाश करते रहे ।इसमें कोई शक नहीं है कि इंसान शुरू से ही लापरवाह रहा है ।आज हम एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं जहाँ हर चीज़ विकाऊ है ।ऐसा समय जिसके बारे में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी ।सोचते सोचते कब चाय खत्म हो गई पता ही नहीं चला। काश ! उस समय इंसानों ने प्रकृति का खयाल रखा होता। अगर ऐसा होता तो आज हमें यह दिन नहीं देखना पड़ता ।

पलकिन जैन
नौवीं ई
भारतीय विद्यालय मस्कत

जिंदगी

‘ जिंदगी एक सफर है सुहाना यहाँ कल क्या हो किसने जाना ?’हमारी जिंदगी एक सुहाना सफर है , जहाँ हम हर मोड़ पर हम कुछ नया सीखते हैं।जिंदगी हमें हमेशा अपनी गलतियाँ सुधारने का मौका देती है पर अकसर हम उसे ढूँढ़ नही पाते।हमें अपनी जिदंगी में वहुत सी मुश्किलों का सामना करना पडता है।लेकिन कुछ लोग उ स कठिन परिस्थिति से ड़रते हैं और पीछे हो जाते हैं। अकसर हम अपनी जिंदगी के वारें में शि कायत करते हैं और कमी निकालते हैं।जिंदगी लड़ाईझगड़ा और कमी निकालने के लिए वहुत छोटी है।इसलिए जिंदगी के हर पल को हँसीखुशी से विताना चाहिए। जिंदगी की कुछ खुशियों को लेकर हम ज़्यादा देर तक खुश नही रह सकते लेकिन एक दुख के कारण हम लंवे समय तक अथवा लगभग पूरी जिंदगी रोते हुए विता देते हैं।हमारी जिंदगी एक चकव्यूह की तरह है।इसमें आगे वढ़ने का रास्ता हमें स्वयं खोजना है । कुछ लोग जिंदगी के खोए हुए टुकडे को ढूंढ़ने में मदद कर सकते हैं लेकिन असली खोज़ तो हमें ही करनी है ।

शाम्भवी सिन्हा
नौवीं ‘ अ ‘
भारतीय विद्यालय अलसीव

वसुधैव कुटुम्बकम

एक केवल मैं नहीं, एकत्र तो पूरा संसार है ।

अविश्वसनीय है ; परंतु, यही साहित्यकार की कलम अकसर ऐसी ही वाणी द्वारा वसुधैव कुटुम्बकम मान्यता का अलंकरण करती है।

लोग इन पंक्तियों की मधुरता को तो अवश्य भाँप लेते हैं, मगर उन्हीं पंक्तियों के आंतरिक आशय को परख नहीं पाते । साहित्य के सागर में डूबना इक्कीसवीं सदी की इस गति में कदाचित संभव नहीं । इसलिए, एक ही माँ की संतान होने के बावजूद, हमने अपने आपको बाँट कर रख दिया है । ऐसा क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर मिलना लगभग असंभव है ।

कई वर्षों से अपने आप को आकार देकर प्रकृति का सौंदर्य विस्तृत कर, अन्य उतार-चढ़ाव झेलकर आज इस संसार ने जब स्वयं को निखारा, तो मानव जाति ने उसी धरा को विभिन्न भागों में विभाजित कर दिया । देश-विदेश की सरहदे और जात-पात के नाम की ऊँची दीवारें खड़ी कर दीं। धर्म ने तो कुछ ऐसी काया पलटी कि विश्व का निर्माण करनेवाले उस परमात्मा को भी अपनी संतुष्टि के हिसाब से बाँट दिया।

विचार करो यदि प्रकृति के इस अजूबे को हमने रणभूमि में न बदला होता तो? वृक्ष की कोपलों को काँटों में न परिवर्तित किया होता तो? वसुधैव कुटुम्बकम का सुरीला गीत आज विश्व के कोने-कोने में सुनाई देता। जब भक्ति की शक्ति में एकता के स्वर गूँजते, तो निस्संदेह परमात्मा भी संसार को स्वर्ग का दर्जा देते।

जब गुण और ज्ञान की अनंत धारा बहती है, तो भेदभाव जैसी तुच्छ चट्टानें उसके वेग के सामने चूर-चूर हो जाती हैं। यदि इसी सोच के साथ दुनिया का हर एक व्यक्ति अकेला नहीं, परंतु पूरे समुदाय को लेकर आगे बढ़े, तो वह दिन दूर नहीं जब अंततः कोई पीछे नहीं रह जाएगा। स्वर्णिम सूर्योदय जब इस वसुधा को रोशन करता है तब पक्षपात का अंश भी नहीं दिखता। जब उस परमशक्ति ने हमें एक जैसा बनाया है, फिर क्यों हम इस परिवार को स्वीकार करने से कतराते हैं?

बंद करो यह मनमानी अपनी, रोक दो इस युद्ध को । क्यों, भाई ही भाई का शत्रु हुआ है, क्यों मानवता का संहार करे तू? मैं नन्हीं ही जान यह तब तक पूछती रहूँगी जब तक ‘वसुधैव कुटुम्बकम’ को न सत्य कर दिखाए तू। चुनौती समझो इसे या फिर मानो इसे मेरा अनुरोध, इस संसार का एकजुट देखने का स्वप्न न जाने कितनी आँखों में निवास करता है । इसे सत्य बनाना अब हमारी ज़िम्मेदारी है। एक ऐसी दुनिया, जहाँ तेरा-मेरा नहीं सब केवल हमारा हैं । इस अभिलाषा को पूर्ण करने का बीड़ा पूरी मानव जाति को एक-जुट होकर उठाना पड़ेगा ।

तभी उन फूलों की क्यारियों में काँटे नहीं रहेंगे । इंद्रधनुष के सातों रंग हमारे जीवन में घुलेंगे, खुशियों की किलकारियाँ चारों ओर गूँजेंगी। तभी तो यह रणभूमि विकास की स्वर्णभूमि में परिवर्तित होगी। तभी तो हर दिन केवल सवेरे का उजियाला होगा । तभी तो ‘वसुधैव कुटुम्बकम’ की वास्तविकता उभरकर बाहर आएगी ।।

सूज़न शौकत
XII-A
इंडियन स्कूल सलालाह

शरीर भागों का हड़ताल !

एक दिन शरीर के सभी भाग जैसे हाथ,पैर, आँखें आदि मिलकर बात कर रहे थे। वे सभी शरीर के कार्यों से खुश नहीं थे। सभी भाग अपने कठोर कामों की तुलना पेट से कर रहे थे।

हाथ ने बोला, "पेट कुछ नहीं करता है। हम ही भोजन को लेकर पेट में डालते हैं।" फिर मुँह ने

हाथों से बोला, "तुम तो मुँह में केवल भोजन डालते हो, मैं तो उसे चबाकर पेट को देता हूँ। वह कुछ नहीं करता।" अब पैर की बारी आई, वह बोला "हम इस मोटे पेट को हर तरफ़ लेकर फिरते हैं। कितना भारी है यह। अब आँखों ने कहा- " मेरे बिना वह कुछ नहीं देख सकता परन्तु जो कुछ खाना मुझको पसंद है वह सब पेट को ही देता है।" आखिर में नाक घमंड से बोली -"मैं ही भोजन की सुगंध पहचानती हूँ।" इस तरह एक दूसरे से बात किए और सब तय करके बोलने लगे - हड़ताल ! हम सब पेट केलिए काम नहीं करेंगे, काम नहीं

करेंगे .....।

वे सब ऐसे ही घंटों तक काम नहीं किए और थकने लगे। फिर उन सबने विचार किया, तब सबको समझ में आया कि जो काम वे करते थे; उसी से पेट को शक्ति मिलती थी और पेट की शक्ति से बाद में उन सबको ताकत मिलती थी। अब वे सब कहने लगे-"हम हड़ताल वापस लेते हैं और हम अपना काम अच्छी तरह से करेंगे।"

नैतिक मूल्य : काम करने केलिए बहाना नहीं बनाइए और जो काम करेंगे, उसका फल ज़रूर मिलेगा।

PUNEETGOPINATH
Class: VI B
INDIAN SCHOOL, IBRI.

युवावर्ग और समाजसेवा

इस प्रगतिशील जगत में आज खास तौर पर युवावर्ग जीवर्न मूल्यों से दूर होता जा रहा है। शायद आज की भागदौड़, पढ़ाई लिखाई और व्यस्ततम् जीवनशैली में सड़क के उस पार बैठे किसी गरीब या व्यथित की पुकार इन्हें सुनाई ही नहीं देती। जब भी हम 'युवा' नाम सुनते हैं तो हमारे दिमाग में ऊर्जा से युक्त ऐसे लोगों की तस्वीर उभर कर आती है जो सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए लहरों से टकराती अपने जीवन की नाव को किनारे तक सफलतापूर्वक ले जाते हैं; परंतु आज युवाओं की ऊर्जा और क्षमता का सही रूप से इस्तेमाल नहीं हो रहा है क्योंकि वे दिशाहीन हो गए हैं। आज का युवा अपने लक्ष्य से भटक रहा है, उसमें परोपकार का भाव नगण्य है क्योंकि उसका सही मार्गदर्शन नहीं हो रहा है। इसके कारण अनेक हैं परंतु मेरा मत है कि आज अधिकतर अभिभावक अपने बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रखते हैं और बच्चों को चिकित्सक, इंजीनियर या कोई उच्च पद प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। छात्रों को जीवन में समाज सेवक बनने की सलाह कोई नहीं देता है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और वह समाज में रह कर अनेक लाभ प्राप्त करता है तो इसमें गलत क्या है कि मनुष्य समाज के हित में कार्य करे। हमारे देश में अनेक समाज सेवकों ने अनेक सामाजिक बुराइयों को दूर किया है और लोगों के हित में कार्य किया है तो आज का युवा सामाजिक कार्य करने से वंचित क यों है? युवा अपने देश में रहकर सामाजिक संस्थाएँ खोलकर समाज के हित में कार्य कर सकता है; जिससे आनेवाली पीढ़ी बुराई व कलंक रहित समाज में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके। अब तो ' बैचलर इन सोशल वर्क ' नाम की डिग्री भी ली जा सकती है जिससे युवावर्ग समाजसेवा को पेशे के तौर पर अपना सकता है। भ्रष्टाचार, दहेजप्रथा, बालमज़दूरी आदि बुराइयों को दूर करने तथा महिला सशक्तीकरण जैसे सामाजिक कार्यों के प्रति उद्योग करने की क्षमता एकमात्र युवावर्ग के पास ही है परंतु वे चाहते हुए भी अपने समाज और अपने देश की सेवा नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि इस आर्थिक युग में धन को ही सर्वोपरि माना गया है। शिक्षा के पाठ्यक्रम में समाजसेवा जैसे विषयों को स्थान दिया जा सकता है। युवाओं को प्रेरित कर उ नकी क्षमता और ऊर्जा का सही उपयोग करना होगा। यही समय की माँग है।

नाम रिया सक्सेना
नौवीं
विद्यालय इंडियन स्कूल, सोहार

करतें हैं हम इन्हें सलाम

प्रसिद्ध अभिनेत्री सुधाचंदन, पैरों से लाचार थी,
पर अपने नृत्य द्वारा उन्होंने सबको
आश्चर्यचकित कर दिया।

प्रोफ़ेसर स्टीफ़न हॉकिंस को भला कौन नहीं जानता? 21 वर्ष की आयु से वे शारीरिक रूप से पूरी तरह अपंग थे। उनकी ज़िंदगी पूरी तरह व्हील चेयर के साथ जुड़ी हुई थी। प्रोफ़ेसर स्टीफ़न हॉकिंस अपने आप में एक मिसाल थे। वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफ़ेसर थे। इन्होंने ब्लैक होल्स' के बारे में जानकारी दी। 14 मार्च 2018 में उनकी मृत्यु हो गई।

विना हाथों के जन्मी सविता मोनीष अपने पैरों से सिर्फ़ लिखती ही नहीं हैं बल्कि खाना खाने, चित्र बनाने, नहाने,बाल सँवारने जैसे काम भी कर लेती है।

सुनने,बोलने और देखने में असमर्थ हेलन केलर ने हाथों के स्पर्श द्वारा बातों को समझा। बाद में हेलेन ने ब्रेल लिपि पढ़ना सीखा एवं नेत्रहीनों के लिए स्वयं ब्रेल लिपि में पुस्तकें लिखीं।

मेहा मरियम थॉमस
दसवीं डी
भारतीय विद्यालय मुलद्धा

मेरी ऐतिहासिक यात्रा

भारत एक प्राचीन देश है और इसका इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण है। भारत में कई ऐतिहासिक स्थल, प्राचीन स्मारक तथा राजमहल हैं और उनसे जुड़ी कहानियाँ अविश्वसनीय हैं। हाल ही में मैंने भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित 'हंपी' नामक ऐतिहासिक जगह की यात्रा की। 'हंपी' का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। अपने समय में यह समृद्ध एवं सपन्न शहर था। इतना ही नहीं ,उस समय में वह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा शहर था। यहाँ की वास्तुकला अद्भुत है। हंपी में स्थित कमल महल,पत्थरों से बना रथ,संगीत की लहरें बजाने वाले पत्थरों के स्तंभ, देखने के लिए देश विदेश से हज़ारों की संख्या में पर्यटक आते हैं। हंपी अपने ज़माने में इतना वैभवशाली था कि यहाँ लोग हीरे खरीदने आते थे। इतना ही नहीं हंपी में उन दिनों स्वर्ण युग माना जाता था क्योंकि हंपी के राजा अनाज और सोना गरीबों में बाँटा करते थे। उस समय के कुछ इतिहासकारों ने हंपी को रोम से भी अधिक वैभवशाली माना था। हंपी को यूनेस्को ने विश्व विरासत का दर्जा दिया है।

आस्था अमित देशमुख
कक्षा-पाँचवीं बी
भारतीय विद्यालय मुलद्धा

भारतीय नारी शक्ति

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पगतल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।

उपर्युक्त पंक्तियाँ हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री जयशंकर प्रसाद की हैं। हम प्राचीन काल से देखते आए हैं कि भारत में नारी को एक शीर्ष स्थान पर रखा गया है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूजनीय एवं देवीतुल्य माना गया है। हम अगर भारत की पौराणिक कथाओं में से माँ दुर्गा और महिषासुर की कहानी लें तो भी हम देखेंगे कि जब देवताओं से महिषासुर को हराया नहीं गया तब उनको माँ दुर्गा के पास ही मदद के लिए जाना पड़ा था। तत्कालीन समाज में किसी भी विशिष्ट कार्य के संपादन में नारी की उपस्थिति महत्त्वपूर्ण समझी जाती थी। लेकिन दिन-प्रतिदिन नारियों की स्थिति बिगड़ती चली गई। अंग्रेज़ी शासनकाल के आते-आते भारतीय नारी की दशा अत्यंत चिंताजनक हो गई थी। उसे अबला की संज्ञा दी जाने लगी और उसे उपेक्षा एवं तिरस्कार का सामना करना पड़ा।

राष्ट्रीय कवि श्री मैथिली शरण गुप्त ने इस स्थिति को बड़े ही संवेदनशील शब्दों में व्यक्त किया है-

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

इसमें कवि ने एक नई जान को जन्म देने की क्षमता-शक्ति और बोझ उठाने की पीड़ा को स्पष्ट किया है। उन दिनों में महिलाओं को घर के अंदर रखा जाता था। उन्हें न अकेले बाहर जाने का हक था और न समाज में बोलने का। भारतीय नारियों से मताधिकार का हक भी छीन लिया गया था। तब का समाज पुरुष प्रधान बन गया था। महिलाओं के लिए पुरुषों के आदेशों को पालन करना अनिवार्य था नहीं तो पुरुष उन्हें कठोर सजा देते थे। लेकिन फिर भी भारतीय नारी ने समाज के तौर-तरीके तोड़कर नाम कमाया है। झांसी की रानी,चेनम्मा,बेगम हज़रत,सावित्री बाई , कमलादेवी चैट्टर्जी, झलकारी बाई आदि महिलाओं ने स्वतंत्र भारत को पाने के लिए सब कुछ कुर्बान कर दिए थे। अब उनके नाम इतिहास के पन्नों में सदा जीवित रहेंगे।

आज भी भारतीय नारी को कई असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। आज भी लड़कियाँ अकेले बाहर जाने से कतराती हैं। यद्यपि भारतीय नारी सुरक्षित नहीं है फिर भी दुनिया में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाओं की उपस्थिति नहीं है। निर्मला सीतारमन भारत की प्रथम रक्षा मंत्री राजनीति के क्षेत्र में सफल हैं। ऐसी कई और महिलाएँ हैं जैसे डॉ आनंदी गोपाल जोशी, इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, आरती साहा, प्रतिभा पाटिल आदि ने भारतीय नारियों का नाम रोशन किया है। इसलिए कहते हैं -

"जीवन की कला को अपने हाथों से साकार कर
नारी ने सभ्यता और संस्कृति का रूप निखारा है,
नारी का अस्तित्व ही सुंदर जीवन का आधार है।"

स्त्री की उन्नति पर ही राष्ट्र की उन्नति निर्भर है। अतः नारी का मान रखो;वह शक्ति की रानी है।

अंशी दासगुप्ता
आठवीं
आई. एस. जी. -आई

सुंदर दुनिया

गायत्री अनिरुद्ध
पाँचवी
आई. एस. जी -आई

कितनी सुंदर है यह दुनिया
पेड़ -पत्ते और ये नदियाँ
ऊँचे पर्वत और इंद्रधनुष
कितनी सुंदर है यह दुनिया।
लेकिन आज ऐसा नहीं है
बहुत प्रदूषण और गंदगी है
हमें प्रदूषण को दूर हटाना है
दुनिया को फिर से सुंदर बनाना है।
हम सब मिलकर कदम उठाएँगे
देश को स्वच्छ करके सुंदर बनाएँगे।।

वर्षा रानी

बादल आए, बादल आए,
चारों ओर हैं छाए छाए,
मोर मग्न हो नाचे गाए,
देखो देखो बादल आए।
आ गई देखो वर्षा रानी,
चारों ओर दिखे अब पानी,
ओ मेरी प्यारी सी नानी,
अब तो सुनाओ कोई कहानी।

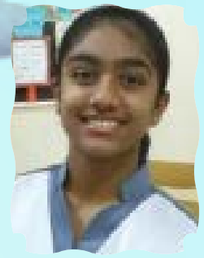

रेनी रेजी
सातवीं बी
भारतीय विद्यालय मुलदधा

कृतज्ञता महसूस
करना और इसे
व्यक्त न करना
ठीक ऐसे ही है
जैसे एक उपहार
को ढके रखना
और इसे न देना।

"हिंदी भाषा की उन्नति के बिना
हमारी उन्नति असम्भव है।"
- गिरधर शर्मा।

For private circulation only